सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण

सद्दाम हुसैन
यूजीसी–नेट, राजनीति विज्ञान
ईमेलः saddam16395@gmail.com

सारांश

''खबर नहीं इस जुग में पल की
समझ मन! को जाने कल की?''

राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में विद्यालय की अहम भूमिका होती है। विद्यालय ईंट और गारे से बना हुआ भवन नहीं है बल्कि व्यक्ति निर्माण की कार्यशाला होती है। व्यक्ति के निर्माण से परिवार का निर्माण, परिवार से ग्रामों का निर्माण, ग्रामों से समाज का निर्माण होता है तथा समाज से राष्ट को निर्माण होता है।

समाज निर्माण के बिना राष्ट्र–निर्माण का राग अलापना बड़ा धोखा है। भारत में सामाजिक गैर–बराबरी है। यह गैर–बराबरी वर्ग और जाति भेद की सामाजिक व्यवस्था के चलते है, इसकी वजह से दलित और पिछड़ा वर्ग दीन–हीन दया में जीवन जीने को मजबूर है। अब जरूरत है इसे बदलने की। भारत में सदियों से चली आ रही सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक गैर बराबरी दूर करके भारतीय संविधान के अनुरूप समतापूर्वक सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण का नया माहौल बनाना होगा। देश में सामाजिक बराबरी लाना बहुत ही जरूरी है। जबकि ये जरूरत आज की नहीं, बल्कि प्राचीनकाल में भी इनकी जरूरत थी और हमारे गुलाम भारत को आजाद होने के लिए भी जरूरत थी और आज स्वतंत्र भारत को पुनः जरूरत है।

प्रस्तावना

समाजिक परिवर्तन में स्वास्थ्य, शिक्षण, जल व स्वच्छता, आवास और अन्य शामिल है। ज्यादातर लोग इन आवश्यकताओं की पूर्ति निजी क्षेत्र की संवाओं से करते हैं, जबका इसका उत्तरदायित्व सरकार का है। जो लोग आर्थिक और सामाजिक रूप से सक्षमह हैं। उनके लिए राजनैतिक सक्षमता भी सहज से हो जाती है। सक्षमता हासिल करने के लिए संगठन बनाना मूलमंत्र है। संगठन बनाना, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एकजुट होकर मिलजुल कर शक्तिवान होते हैं। संगठन बानाने से व्यक्ति के सोचने, देखने और अनुभव करने का तीका ही बदल जाता है। उनकी भौतिक स्थिति में भी बदलाव आने लगता है। वे किसान जो अकेले बाजार में प्रवेश करने में असमर्थ महसूस करतें हैं, सामूहिक रू‍प से बाजार में अपना स्थान बना लेते हैं। गरीब महिलाएं अपनी छोटी–छोटी बचत से स्थानीय बचत बैंक बना सकती हैं, भूमिहीन मजदूर

जमीन पर सामूहिक मालिकाना हक प्राप्त कर सकते हैं। किसी गांव में महिलाएं समूह में संगठित होकर स्कूल चला सकती हैं या आंगनबाड़ी या स्वास्थ्य केन्द्र खोल सकती हैं। संगठन बनाने से शक्ति बढ़ती है और उनकी आवाज सूनी जाने लगती है। यही बढ़ती शक्ति संगठनों का आधार है। संगठन के जरिए अपनी आवाज बुलंद की जा सकती है। नीतियां बदली जा सकती है। नये कानून बनाए जा सकतें हैं और नीति–निर्धारण के क्षेत्र में अपना प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। जिसका परिणाम सामाजिक परिवर्तन है और यही सामाजिक परिवर्तन राष्ट्र–निर्माण का मूल कारक है। संगठन का स्वरूप लोकतांत्रिक होना चालिए।

सामाजिक परिवर्तण और राष्ट्र–निर्माण पर स्वामी विवेकानन्द के विचार

स्वामी विवेकानन्द सही अर्थों में 'सामाजिक क्रांतिकारी' थे। भारतीय इतिहास के अध्ययन से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारतीय समाज पर मुख्य रूप से ब्राह्मण तथा क्षत्रिय इन दो जातियों का प्रभुत्व रहा है। विवेकानन्द द्वारा 'सामाजिक समानता' संदेश जाति–व्यवस्था पर आधारित सामाजिक रूढ़िवादी तथा कठोर 'सामाजिक स्तरण' के लिए चुनौती थी। उनका 'सामाजिक समता' का विचार समाजवादी दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। स्वामी विवेकानन्द का समाजवाद के प्रति झुकाव उनके द्वारा सभी भारतवासियों के लिए उन्नति के समान अवसर उपलब्ध कराने के विचार के अन्तर्गत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने कहा– यदि ब्राह्मण के लड़के को पढ़ाने के लिए एक शिक्षक जरूरी है तो चांडाल के लड़के को पढ़ाने के लिए दस शिक्षक होने चाहिए। जिसे प्रकृति ने जन्मजात कुशाग्र बुद्धि नहीं दी, उसे अधिक मदद मिलना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के इन शब्दों में यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि वे किसी भी समाजवादी से अधिक समानमता तथा सामाजिक न्याय के समर्थक थे। आज भारत में राजनीतिज्ञों द्वारा सामाजिक न्याय का जो ढ़िढ़ोरा पीटा जा रहा है तथा इसे रानीतिक हथियार के रूप में जो इस्तेमाल किया जा रहा है, उसने इस सामाजिक न्याय की उद्घघोषण लगभग एक शताब्दी पूर्व क चुके थे। उन्होंने कहा था ''मैं ऐसे इश्वर में विश्वास नहीं करता जो मुझे यहाँ रोटी न दे सके तथा स्वर्ग में शाश्वत आनन्द प्रदान करनेका आश्वसन दे।''

विवेकानन्द न भी भारत में समाजवाद की दिशा में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए प्रशिक्षित कार्यकार्त्ताओं की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दषष्टि से भी विवेकानन्द को समाजवादी मानना उपयुक्त होगा। विवेकानन्द ने समाज में परिवर्तन की वकालत करते हुए मानवीय चेतना को दैवी स्तर पर ले जाने पर बल दिया है। विवेकानन्द शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रकाशित मार्क्सवाद दल के मुख्य पत्र गणशक्ति में एक लेख में तो लेखक ने यहाँ तक कहा था कि ''विवेकानन्द यदि समाजवादी नहीं थे तो वे कुछ भी नहीं थे।''

सामाजिक परिवर्तण और राष्ट्र–निर्माण में गांधीजी

गांधीवादी विचारधारा सामाजिक परिवर्तन और राष्ट–निर्माण पर कितना बल देती है यह उनके धर्म, ईश्वर और सत्य की अवधारणा से एकदम स्पष्ट है। गांधीजी ने अपने जीवन में आध्यात्मिकता और नैतिकता को प्रधानता दी थी और वा प्रधानता उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आदि सभी प्रकार के विचारों में स्पष्ट झलकती है। गांधीजी, परम्परागत अर्थों में

राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे और न ही उन्होनें कभी ऐसा होने का दावा ही किया। गांधी का सामाजिक परिवर्तण और राष्ट्र निर्माण चिन्तन कर्म के माध्यम से, उद्देश्यों और शाधनों में समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न है। जोन बोन्दुरा के अनुशार, ''गांधीजी का योगदान सामाजिक और राजनीतिक साधानों के विकास तक ही सीमित रहा।

गांधी जी एक महान कर्मयोगी थे जो जीवन को एक ऐसी अविभाज्य इकाई समझते थे जिसकी विभिन्न क्रियाओं को एक–दूसरे से पष्थक नहीं किया जा सकता अैर इसलिए वे यह मानते थे कि उन्होंने अपने धार्मिक कर्तव्यों के एक अंग के रूप में ही राजनीति में भाग लिया है। उनहोंने राजनीति में धर्म का समावेश करके नैतिकता के उस दोहरे मापदण्ड को मिटाने का प्रयास किया जो सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण में बाधा पहुंचाने वाले ऐसे शब्दों में निहित होता है। उनका यह विश्वास था कि यदि जीवन के लौकिक तथा धार्मिक पक्षों के मध्य पार्थक्य की एक दीवर खड़ी कर दी गयी तो न केवल धर्म का प्रतिष्ठित स्थान जाता रहेगा बल्कि वह अपने उस वास्तविक कार्य को करना भी बन्द कर देगा जिसके लिए उसका अस्तित्व है। गांधीजी के शब्दों में, ''जो यह कहे हैं कि राजनीति से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं वे धर्म को नहीं जानते। जो देश प्रेम को नहीं जानता वह धर्म को नहीं जानता।'' इस स्थिति में कभी भी सामाजिक परिवर्तन नहीं लाया जा सकता और ना ही राष्ट्र निर्माण की नीव डाली जा सकती है।

गांधीजी राज्य विरोधी थी। मार्क्सवादियों तथा अराजकतावादियों के समान वे एक राज्यविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे। वे दार्शनिक, नैतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक कारणों के आधार पर राज्य का विरोध करते थे। जीवन के भरण–पोषण करने के लिए जितनी हिंसा अनिवार्य होती है वह क्ष्म्य होती है। शरीा ईश्वर की धरोहर है जिसे नष्ट करने का व्यक्ति को कोई अधिकार नहीं है। गांधी जी अहिंसा के सम्बनध में कल्पनावादी नहीं, व्यवहारिक थे। यह उल्लेखनीय है कि यद्यपिग गांधजी हिंसक जीव–जन्तुओं की हत्या की अनुमति देते अवश्य हैं, लेकिन उनके हृदय का भाव यही है कि यदि मनुष्य अहिंसा का पालन यथोचित रूप से करे तो हिंसक जीव भी मनुष्य को हानि नहीं पहुंचायेगा। इसके माध्यम से हम समाज में सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं जो राष्ट्र निर्माण के अति आवश्यक है।

सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण पर जय प्रकाश नारायण के विचार

जय प्रकाश नारायण भारत में समाजवाद के प्रमुख प्रवक्ता और चिन्तक माने जाते हैं। उन्हें गांधीवादी चिन्तन का प्रमुख दार्शनिक माना जाता है। सर्वोदयी विचारकों में उनका नाम विनोभा भावे के साथ बड़े आदर से लिया जाता है। उनके प्रमुख राजनीतिक और आर्थिक विचार दिए। उनकी दृष्टी में समाजवाद आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धांत है। समाजवाद का उद्देश्य समाज का समन्वित विकास करना है। जय प्रकाश ने समाजवाद के माध्यम से अनेक सामाजिक एवं अर्थिक समस्याओं का निदान ढूंढ़ा है।

जय प्रकाश भारम की एकता के लिए भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा का समर्थन करते हैं। इसने धर्मनिरपेक्षतावाद को राष्ट्रवाद की अवधारण का आधार माना है। इसके अनुसार राज्य

का धर्मनिरपेक्ष होना ही राष्ट्रीय एकता के लिए प्रर्याप्त नहीं है। भारतीय समाज राष्ट्रवाद के साम्प्रदायिक पक्ष के प्रति जितना जाग्रत रहेगा उतना ही राष्ट्रीय एकता को बल प्राप्त होगा। सामाजिक परिवर्तन के ढ़ंग की खोज में जय प्रकाश कम्युनिज्म से समाजवाद, उससे गांधीवाद और अन्ततः सर्वोदय तक आ पहुंचे। उनकी बड़ी तीव्र आकांक्षा थी कि यह विशाल भारतीय समाज, जो सदियों से सोया पड़ा है, ऐसे आधुनिक समाज में रूपान्तरित हो जाए, जहां आर्थिक न्याय पर आधारित लोकतंत्र का वर्चस्व हो। उन्होंने कहा, ''यह ऐसा लोकतन्त्रीय समाज होगा, जिसमें प्रत्येक नागरिक श्रमिक होगा और प्रत्येक नर–नारी में समानता होगी, सबकों समान अवसर उपलब्ध रहेगा, जहां प्रगति योजनाबद्ध होगी, श्रम आनन्द से समन्वित होगा, जीवन सम्पन्न, सम्पूर्ण और सुन्दर होगा।''

जय प्रकाश ने अस्वीकार किया कि अभीष्ट सामाजिक परिवर्तन लाने और समाज की सेवा करने के लिए उन्हें शासन पर अधिकार करना पड़ेगा। उन्होंने इस मत का भी समर्थन नहीं किया कि राजनीतिक दल इस भूमिका का निर्वाह ठीक प्रकार से कर सकते हैं, क्योंकि राजनीतिक दलों को तो सत्ता संघर्ष, सत्ता प्राप्ति और सत्ता भोगने में ही सर्वाधिक आनन्द और आकर्षण की अनुभूति होती है। जय प्रकाश जी के इन सभी विचारों से एक ही ध्वनि आती है कि उनका दृढ़ विश्वास था कि न तो राजकीय सत्ता और न ही विभिन्न राजनीतिक दल समाज में आधारभूत परिवर्तन ला सकते हैं, केवल आदर्शवाद और दृढ़वती भावना से प्रेरित समर्पित कार्यकर्ताओं की संगठित कार्य शक्ति ही इस प्रकार का नितान्त अभीष्ट परिवर्तन ला सकती है।

सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण में रामाबाई के योगदान

पंडित रामाबाई का जन्म एक उच्च जाति में हुआ था। वे आधुनिक भारत की सर्वाधिक विवादास्पद समाज सुधारक थी क्योंकि उच्च जाति में जन्म लेने के बावजूद भी उन्होंने पुरूष प्रधान समाज में पितृसत्ता का विरोध किया ओर नारी के अधिकार और स्वतंत्रता की बात कही। रमाबाई द्वारा धर्मशास्त्रों के अध्ययन ने रमाबाई को उस तिरस्कार और अपमान से पूर्पतया परिचित कराया जिससे सभी जातियों की महिलाएँ और निम्न जाति के पुरूषों के साथ इन ग्रंथों में व्यवहार किया गया था।

रमाबाई ने अपने निजी जीवन में इस भेदभाव को अस्वीकार कर दिया जब उन्होंने बिपिन बिहारी से जो एक शूद्र थे, विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करने का निर्णय किया और इस प्रकार सोच समझकर परम्परा को तोड़ा। रमाबाई ने अपना पहला सार्वजनिक पितृसत्तात्मक शक्तियों से किया जब उन्होंने महिलाओं को एकजुट करने के लिए 1882 में पूना में आर्य महिला समाज की स्थापना की और तुरंत एक विवाद उत्पन्न कर दिया। परंतु वे महाराष्ट्र में महिलाओं से जुड़ने में असफल हो गई और स्वंय को अलग–अलग महसूस किया क्योंकि न तो उनका कोई समुदाय था न कोई सामाजिक आधार था और न ही वास्तविक भावनात्मक बंधन थे जिनपर निर्भर रहा जा सकता था।

सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण पर वी डी सावरकर के विचार

हिन्दुत्व की पहली परम्परा का नेतृत्त्व करने वाले वी डी सावरकर एक चमत्कारी नेता

थे जिनहोंने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके जीवन के प्रथम चरण में, उन पर इटली के राष्ट्रवादी जोसेफ मुजिनी के दर्शन का प्रभाव पड़ा और उन्होंने मिश्रित भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा का समर्थन किया जो अरविंद और तिलक के राष्ट्रवाद से अलग नहीं था। इस अवधि के दौरान उनकी राष्ट्रवाद की अवधारण में धर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई परंतु इस अवधारणा ने किसी धार्मिक समुदाय को अपने से अलग नहीं किया।

वी डी सावरकर पश्चिम भारत में पुनर्जागरण से प्रभावित हुए और अपने प्ररंभिक दिनों में वे विवकेशील दार्शनिक गोपाल–गणेश आगरकर से प्रभावित हुए। सावरकर व्यवहारवादी ज्ञानमीसांसा के समर्थक थे और उनहोंने ज्ञानेन्द्रियों को प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्ञान के उचित स्त्रोत के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने धर्म ग्रन्थों की धार्मिक पवित्रता को अस्वीकार किया और यह माना कि सभी धर्मग्रंथ मानव के बनाए हुए हैं और उन धर्मग्रंथों की शिक्षाएँ हर समय सभी समाजों पर लागू नहीं हो सकतीं। इस प्रकार सावरकर के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत में, जीवन संघर्ष के सिद्धांत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सावरकर के लिए विवक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी समाज में परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत जरूरी थे।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद की सोच किसी वर्ग विशेष को लेकर नहीं बल्कि समग्र विश्व को उत्थान की ओर ले जाना है। आज की बिगड़ती सामाजिक स्थिति में युवा पीढ़ी को उनके विचार आत्मसात करने की जरूरत है तभी युवा वर्ग समाज और देश को प्रगति की ओर ले जा सकेगा। युवा देश के कर्णधार हैं, उन्हें यह जिम्मेदारी समझनी ही होगी। आज विश्व भर में अधिकतर युवा बिलासिता और सुख–सुविधा को देखते हुए अपनी देश की जमीन को छोड़कर दूसरी जगह जा रहें हैं। जिससे सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र–निर्माण में दिक्कतें आ रही हैं। युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति होते हैं और विशेषकर भारत जैसे महान राष्ट्र की ऊर्जा तो युवाओं में ही निहित है। युवा देश का वर्तमान है, तो भूतकाल और भविष्य के सेतु भी हैं।

भूमंडलीकरण ने राष्ट्र–निर्माण की स्थितियों को प्रभावित किया है। हमें इसका सामना करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को यह आंकलन खुद करना होगा कि राष्ट्र–निर्माण में उसका योगदान कितना है। हमारा दायित्व क्या है? हम उसे कितना पूरा कर रहे हैं, इस विवके को ध्यान में रखते हुए हमें अपने देश के पुनुरूत्थान के लिए संकल्प लेना होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1 यंग इंडिया, पृ0 **162,** 2 जुलाई 1962
2 गांधी, आत्मकथा, सत्य का प्रयोग, वाणी प्रकाशन, आवषति संस्करण 2015, पृ0–265
3 वही पृ0–**266, 267, 329**
4 डा0 पुखराज जैन, डा0 बी0 एल0 फड़िया, राजनीतिक विचारक, पाश्चात्य एवं भारतीय, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा पृ0–**280, 285**
5 डा0 पुखराज जैन, डा0 बी0 एल0 फड़िया, राजनीतिक विचारक, पाश्चात्य एवं भारतीय, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा पृ0– **354, 355, 358, 359**

6 जय प्रकाश नारायण, टोटल रिव्यूलेशन, वोल्यूम प्रथम, पृ0–16

7 वही पृ0–94

8 जे0 पी0 सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, द्वितिय संस्करण 2016, पीएचआइ लर्निंग लि0

9 https://www.theindiapost.com/headline/veer-savarkar/#:~:text

10 देखा, दिनांक 15.10.2020

11 https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A4% 82%E0%A4%A1%E0%A4%BF%E 0% A4%A4%E 0%A4%BE_%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A4 %BE%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%88

12 देखा, दिनांक 17.10.2020

13 https://www.bharatdarshan.co.nz/author-profile/126/swami-vivekanand-biography-hindi.html

देखा, दिनांक 20.10.2020